PRINTMAN ASSOCIATES (P) LTD.
AN ISO 9001:2015 CERTIFIED CO.

REGULAR CRYSTAL SHEET WALL CALENDAR

SIZE:28"X40"

Introducing Printman's Regular Crystal Sheet wall calendar, setting a new standard for elegance and sophistication. Crafted from a metalized crystal sheet, this product exudes luxury. With advanced 5-color UV offset printing and metallic effects, we ensure stunning and vibrant prints. Each sheet is meticulously packed with Red plastic rods and individual boxes for protection. Elevate your prints with Printman's Regular quality crystal sheet.

आरती श्री गणेश जी की

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभः। निर्विघ्नं कुरू में देव सर्व कार्येषु सर्वदा।।

जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा। माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा ||जय०||
एकदन्त दयावन्त, चार भुजा धारी। मस्तक सिन्दूर सोहे, मूसे की सवारी ||जय०||
पान चढ़ें, फूल चढ़ें और चढ़ें मेवा। लड्डुअन का भोग लगे, सन्त करें सेवा ||जय०||
अन्धन को आँख देत, कोढ़िन को काया। बाँझन को पुत्र देत, निर्धन को माया ||जय०||
सूरश्याम शरण आये सुफल कीजे सेवा। दीनन की लाजराखो शम्भु-सुत वारी ||जय०||
कामना को पूरा करो जग बलिहारी। जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा ||जय०||

1102

AVAILABLE IN :

28" x 40" (Regular Crystal)

श्री लक्ष्मी वन्दना

महालक्ष्मि नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं सुरेश्वरि ।
हरिप्रिये नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं दयानिधे ।।
नमस्तेऽस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते ।
शंखचक्रगदाहस्ते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ।।
नमस्ते गरुडारुढ़े कोलासुरभयंङ्करि ।
सर्व पापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ।।
सर्वज्ञे सर्ववरदे सर्वदुष्ट भयंङ्करि ।
सर्वदुःखहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ।।
सिद्धिबुद्धिप्रदे देवि भक्तिमुक्तिप्रदायिनि ।
मन्त्रपूते सदा देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ।।

आरती श्री लक्ष्मी जी की

ओ३म् जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता। तुमको निशदिन सेवत, हर विष्णु धाता ।।ओ३म्।।
उमा, रमा, ब्रह्माणी, तुम ही जग-माता। सूर्य-चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता ।।ओ३म्।।
दुर्गा रूप निरंजनि, सुख-सम्पत्ति-दाता। जो कोई तुमको ध्यावत, ऋद्धि-सिद्धि धन पाता ।।ओ३म्।।
तुम पाताल-निवासिनि, तुम ही शुभ दाता। कर्म-प्रभाव प्रकाशिनि, भवनिधि की त्राता ।।ओ३म्।।
जिस घर में तुम रहती, तहँ सब सद्‌गुण आता। सब सम्भव हो जाता, मन नहीं घबराता ।।ओ३म्।।
तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न कोई पाता। खान-पान का वैभव, सब तुमसे आता ।।ओ३म्।।
शुभ-गुण-मन्दिर सुन्दर, क्षीरोदधि-जाता। रतन चतुर्दश तुम बिन, कोई नहीं पाता ।।ओ३म्।।
महालक्ष्मी जी की आरती, जो कोई जन गाता। उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता ।।ओ३म्।।
जहाँ तक चरण तेरे पहुँचे, घर शुभ हो जाता। मैं सेवक मैया की शुभ दृष्टि चाहता ।।ओ३म्।।

1104

AVAILABLE IN :

28" x 40" (Regular Crystal)

श्री लक्ष्मी वन्दना

महालक्ष्मि नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं सुरेश्वरि ।
हरिप्रिये नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं दयानिधे ।।
नमस्तेऽस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते ।
शंखचक्रगदाहस्ते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ।।
नमस्ते गरुडारुढ़े कोलासुरभयंङ्करि ।
सर्व पापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ।।
सर्वज्ञे सर्ववरदे सर्वदुष्ट भयंङ्करि ।
सर्वदु:खहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ।।
सिद्धिबुद्धिप्रदे देवि भक्तिमुक्तिप्रदायिनि ।
मन्त्रपूते सदा देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ।।

आरती श्री लक्ष्मी जी की

ओ३म् जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता। तुमको निशदिन सेवत, हरि विष्णु धाता ।।ओ३म्।।
उमा, रमा, ब्रह्माणी, तुम ही जग-माता। सूर्य-चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता ।।ओ३म्।।
दुर्गा रूप निरंजनि, सुख-सम्पत्ति-दाता। जो कोई तुमको ध्यावत, ऋद्धि-सिद्धि धन पाता ।।ओ३म्।।
तुम पाताल-निवासिनि, तुम ही शुभ दाता। कर्म-प्रभाव प्रकाशिनि, भवनिधि की त्राता ।।ओ३म्।।
जिस घर में तुम रहती, तहँ सद्गुण आता। सब सम्भव हो जाता, मन नहीं घबराता ।।ओ३म्।।
तुम बिन यज्ञ न होते, बरत न हो पाता। खान-पान का वैभव, सब तुमसे आता ।।ओ३म्।।
शुभ-गुण-मन्दिर सुन्दर, क्षीरोदधि-जाता। रतन चतुर्दश तुम बिन, कोई नहीं पाता ।।ओ३म्।।
महालक्ष्मीजी की आरती, जो कोई जन गाता। उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता ।।ओ३म्।।
जहां तक चरण तेरे पहुंचे, घर शुभ हो जाता। मैं सेवक मैया की शुभ दृष्टि चाहता ।।ओ३म्।।

1105

AVAILABLE IN :

28" x 40" (Regular Crystal)

आरती श्री अम्बा जी की

जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी । तुमको निशिदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिवरी ।। जय अम्बे ।।
मांग सिन्दूर विराजत, टीको मृगमद को । उज्जवल से दोउ नैना, चन्द्र बदन नीको ।। जय अम्बे ।।
कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजै । रक्त पुष्प गल माला, कण्ठन पर साजै ।। जय अम्बे ।।
केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्पर धारी । सुर नर मुनि जन सेवत, तिनके दुख हारी ।। जय अम्बे ।।
कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती । कोटिक चन्द्र दिवाकर, राजत सम ज्योति ।। जय अम्बे ।।
शुम्भ-निशुम्भ विदारे, महिषासुर घाती । धूम्रविलोचन नैना निशिदिन मदमाती ।। जय अम्बे ।।
चण्ड - मुण्ड संहारे, शोणित बीज हरे । मधु कैटभ दोउ मारे, सुर-भयहीन करे ।। जय अम्बे ।।
ब्रह्माणी रुद्राणी, तुम कमला रानी । आगम-निगम-बखानी, तुम शिव पटरानी ।। जय अम्बे ।।
चौसठ योगिनि गावत, नृत्य करत भैरों । बाजत ताल मृदंगा, और बाजत डमरु ।। जय अम्बे ।।
तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता । भक्तन की दुख हरता, सुख-सम्पत्ति करता ।। जय अम्बे ।।
भुजा चार अति शोभित, वर - मुद्रा धारी । मनवांछित फल पावत, सेवत नर-नारी ।। जय अम्बे ।।
कंचन थाल विराजत, अगर कपूर बाती । श्री मालकेतु में राजत, कोटि रतन ज्योति ।। जय अम्बे ।।
माँ अम्बे जी की आरती, जो कोई नर गावै । कहत शिवानन्द स्वामी, सुख-सम्पत्ति पावै ।। जय अम्बे ।।

1107

AVAILABLE IN :

28" x 40" (Regular Crystal)

महामृत्युन्जय मंत्र

ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टि वर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥

भावार्थ :- हम भगवान शंकर की पूजा करते हैं, जिनके तीन नेत्र हैं, जो प्रत्येक श्वास में जीवन शक्ति का संचार करते हैं, जो सम्पूर्ण जगत का पालन पोषण अपनी शक्ति से कर रहे हैं। उनसे हमारी प्रार्थना है कि वे हमें मृत्यु के बन्धनों से मुक्त कर दें, जिससे मोक्ष की प्राप्ति हो जाएँ, जिस प्रकार एक ककड़ी बेल में पक जाने के बाद उस बेल रूपी संसार के बन्धन से मुक्त हो जाती है उसी प्रकार हम भी इस संसार रूपी बेल में पक जाने के बाद जन्म-मृत्यु के बन्धनों से सदैव के लिए मुक्त हो जाएँ और आपके चरणों की अमृतधारा का पान करते हुए शरीर को त्याग कर आप में लीन हो जाएँ।

मन्त्र लाभ :-
- यह मंत्र जीवन प्रदान करता है। (अकाल मृत्यु, दुर्घटना इत्यादि)
- यह मंत्र सर्प एवं बिच्छु के काटने पर भी अपना पूरा प्रभाव रखता है।
- इस मंत्र का महत्वपूर्ण लाभ है कठिन एवं असाध्य रोगों पर विजय प्राप्त करना।
- यह मंत्र हर बीमारी को भगाने का बड़ा शस्त्र है।

1109

AVAILABLE IN :

28" x 40" (Regular Crystal)

महामृत्युन्जय मंत्र

ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टि वर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥

भावार्थ :- हम भगवान शंकर की पूजा करते हैं, जिनके तीन नेत्र हैं, जो प्रत्येक श्वास में जीवन शक्ति का संचार करते हैं, जो सम्पूर्ण जगत का पालन पोषण अपनी शक्ति से कर रहे हैं। उनसे हमारी प्रार्थना है कि वे हमें मृत्यु के बन्धनों से मुक्त कर दें, जिससे मोक्ष की प्राप्ति हो जाएँ, जिस प्रकार एक ककड़ी बेल में पक जाने के बाद उस बेल रुपी संसार के बन्धन से मुक्त हो जाती है उसी प्रकार हम भी इस संसार रुपी बेल में पक जाने के बाद जन्म-मृत्यु के बन्धनों से सदैव के लिए मुक्त हो जाएँ और आपके चरणों की अमृतधारा का पान करते हुए शरीर को त्याग कर आप में लीन हो जाएँ।

मन्त्र लाभ :-
- यह मंत्र जीवन प्रदान करता है। (अकाल मृत्यु, दुर्घटना इत्यादि)
- यह मंत्र सर्प एवं बिच्छु के काटने पर भी अपना पूरा प्रभाव रखता है।
- इस मंत्र का महत्वपूर्ण लाभ है कठिन एवं असाध्य रोगों पर विजय प्राप्त करना।
- यह मंत्र हर बीमारी को भगाने का बड़ा शस्त्र है।

1110

AVAILABLE IN :

28" x 40" (Regular Crystal)

श्री हनुमान चालीसा

श्रीगुरु चरन सरोज रज, निज मनु मुकुरु सुधारि । बरनऊँ रघुबर बिमल जसु, जो दायकु फल चारि ।। बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन-कुमार । बल बुद्धि विद्या देहु मोहिं, हरहु कलेश विकार।।

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर ।
जय कपीस तिहुँ लोक उजागर ।।
राम दूत अतुलित बल - धामा ।
अंजनि पुत्र पवनसुत नामा ।।
महाबीर बिक्रम बजरंगी ।
कुमति निवार सुमति के संगी ।।
कंचन बरन बिराज सुबेसा ।
कानन कुण्डल कुंचित केसा ।।
हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै ।
काँधे मूँज जनेऊ साजै ।।
शंकर सुवन केसरी नंदन ।
तेज प्रताप महा जग वन्दन ।।
विद्यावान गुनी अति चातुर ।
राम काज करिबे को आतुर ।।
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया ।
राम लखन सीता मन बसिया ।।

सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा ।
बिकट रूप धरि लंक जरावा ।।
भीम रूप धरि असुर संहारे ।
रामचन्द्र के काज संवारे ।।
लाय सजीवन लखन जियाये ।
श्री रघुबीर हरषि उर लाये ।।
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई ।
तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ।।
सहस बदन तुम्हरो जस गावैं ।
अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं ।।
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा ।
नारद सारद सहित अहीसा ।।
जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते ।
कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते ।।
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा ।
राम मिलाय राज पद दीन्हा ।।

तुम्हरो मन्त्र बिभीषन माना ।
लंकेश्वर भए सब जग जाना ।।
जुग सहस्त्र जोजन पर भानु ।
लील्यो ताहि मधुर फल जानु ।।
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं ।
जलधि लाँघि गए अचरज नाहीं ।।
दुर्गम काज जगत के जेते ।
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ।।
राम दुआरे तुम रखवारे ।
होत न आज्ञा बिनु पैसारे ।।
सब सुख लहै तुम्हारी सरना ।
तुम रक्षक काहू को डर ना ।।
आपन तेज सम्हारो आपै ।
तीनों लोक हाँक ते काँपै ।।
भूत पिसाच निकट नहिं आवै ।
महाबीर जब नाम सुनावै ।।

नासै रोग हरै सब पीरा ।
जपत निरन्तर हनुमत बीरा ।।
संकट तें हनुमान छुड़ावै ।
मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ।।
सब पर राम तपस्वी राजा ।
तिनके काज सकल तुम साजा ।।
और मनोरथ जो कोई लावै ।
सोई अमित जीवन फल पावै ।।
चारों जुग परताप तुम्हारा ।
है परसिद्ध जगत उजियारा ।।
साधु संत के तुम रखवारे ।
असुर निकंदन राम दुलारे ।।
अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता ।
अस बर दीन जानकी माता ।।
राम रसायन तुम्हरे पासा ।
सदा रहो रघुपति के दासा ।।

तुम्हरे भजन राम को पावै ।
जनम जनम के दुःख बिसरावै ।।
अंत काल रघुबर पुर जाई ।
जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई ।।
और देवता चित्त न धरई ।
हनुमत सेइ सर्ब सुख करई ।।
संकट कटै मिटै सब पीरा ।
जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ।।
जै जै जै हनुमान गोसाई ।
कृपा करहु गुरू देव की नाई ।।
जो सत बार पाठ कर कोई ।
छूटहि बंदि महा सुख होई ।।
जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा ।
होय सिद्धि साखी गौरीसा ।।
तुलसीदास सदा हरि चेरा ।
कीजै नाथ हृदय मँह डेरा ।।

दोहाः पवनतनय संकट हरन, मंगल मूर्ति रूप। राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप।।

1112

AVAILABLE IN :

28" x 40" (Regular Crystal)

आरती श्री राम लला की

आरती कीजै श्रीराम लला की। पूण निपुण धनुवेद कला की।। धनुष बान कर सोहत नीके। शोभा कोटि मदन मद फीके।।
सुभग सिंहासन आप बिराजैं। वाम भाग वैदेही राजैं।। कर जोरे रिपुहन हनुमाना। भरत लखन सेवत बिधि नाना।।
शिव अज नारद गुन गन गावैं। निगम नेति कह पार न पावैं।। नाम प्रभाव सकल जग जानैं। शेष महेश गनेस बखानैं।।
भगत कामतरु पूरणकामा। दया क्षमा करुना गुन धामा।। सुग्रीवहुँ को कपिपति कीन्हा। राज विभीषन को प्रभु दीन्हा।।
खेल खेल महु सिंधु बधाये। लोक सकल अनुपम यश छाये।। दुर्गम गढ़ लंका पति मारे। सुर नर मुनि सबके भय टारे।।।
देवन थापि सुजस विस्तारे। कोटिक दीन मलीन उधारे।। कपि केवट खग निसचर केरे। करि करुना दुःख दोष निवारे।।
देत सदा दासन्ह को माना। जगत पूज भे कपि हनुमाना।। आरत दीन सदा सत्कारे। तिहुपुर होत राम जयकारे।।
कौसल्यादि सकल महतारी। दशरथ आदि भगत प्रभु झारी।। सुर नर मुनि प्रभु गुन गन गाई। आरति करत बहुत सुख पाई।।
धूप दीप चन्दन नैवेदा। मन दृढ़ करि नहि कवनव भेदा।। राम लला की आरती गावै। राम कृपा अमित फल पावै।।

1113

AVAILABLE IN :

28" x 40" (Regular Crystal)

आरती श्री रामचन्द्र जी की

श्रीरामचन्द्र रघुपुङ्गव राजवर्य राजेन्द्र राम रघुनायक राघवेश। राजाधिराज रघुन्दन रामचन्द्र दासोऽहमद्य भवतः शरणागतोऽस्मि।।

श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन, हरण भव भय दारुणम्। नवकंज लोचन, कंज-मुख कर-कंज पद-कंजारुणम् ॥१॥
कन्दर्प अगणित अमित छवि, नवनील-नीरद-सुन्दरम्। पटपीत मानहु तड़ित रूचि सुचि नौमी जनक सुता-वरम् ॥२॥
भजु दीनबन्धु दिनेश दानव - दैत्यवंश - निकन्दनम्। रघुनंद आनंदकंद कौशलचद्रं दशरथ - नन्दनम् ॥३॥
सिर मुकुट कुण्डल तिलक चारु उदार अंग विभूषणम्। आजानुभुज शर-चाप-धर संग्राम - जित -खर - दूषणम ॥४॥
इति वदति तुलसीदास शंकर - शेष - मुनि - मन - रंजनम्। मम ह्रदय कंज निवास कुरु कामादि-खल-दल-गंजनम् ॥५॥
मन जाहि राच्यो मिलहि सो वर सहज सुन्दर सांवरो। करुणा निधान सुजान शील स्नेह जानत रावरो ।।६।।
एहि भांति असीस सुनी सिय सहित हिय हरषित अली। तुलसी भवनिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मन्दिर चली ।।७।।

ॐ सोरठा- जानि गौरी अनुकूल सिय हिय हरषु न जाई कहि। मंजुल मंगल मूल वाम अंग फरकन लगे।। ॐ

1115

AVAILABLE IN :

28" x 40" (Regular Crystal)

आरती श्री कुंज बिहारी जी की

आरती कुंजबिहारी की। श्रीगिरधर कृष्णमुरारी की ।। (टेक) गले में बैजंतीमाला, बजावै मुरलि मधुर बाला।
श्रवन में कुण्डल झलकाला, नंद के आनन्द नन्दलाला ।। श्रीगिरधर कृष्णमुरारी की ।।
गगन सम अंग कांति काली, राधिका चमक रही आली, लतन में ठाढ़े बनमाली, भ्रमर-सी अलक,
कस्तूरी-तिलक, चन्द्र - सी झलक, ललित छवि स्यामा प्यारी की ।। श्रीगिरधर कृष्णमुरारी की ।।
कनकमय मोर-मुकुट बिलसै, देवता दरसन कों तरसै, गगन सों सुमन रासि बरसै, बजे मुरचंग,
मधुर मिरदंग, ग्वालिनी संग, अतुल रति गोपकुमारीकी ।। श्रीगिरधर कृष्णमुरारी की ।।
जहाँ ते प्रगट भई गंगा, सकल-मल-हारिणि श्रीगंगा, स्मरन ते होत मोह-भंगा, बसी सिव सीस,
जटा के बीच, हरै अघ कीच, चरन छवि श्री बनवारी की ।। श्रीगिरधर कृष्णमुरारी की ।।
चमकती उज्ज्वल तट रेनू, बज रही बृन्दाबन बेनू, चहूँ दिसि गोपि ग्वाल धेनू, हँसत मृदु मंद,
चाँदनी चंद, कटत भव-फंद, टेर सुनु दीन दुखारी की ।। श्रीगिरधर कृष्णमुरारी की ।।
आरती कुंजबिहारी की। श्रीगिरधर कृष्णमुरारी की ।। श्रीगिरधर कृष्णमुरारी की ।।

1117

AVAILABLE IN :

28" x 40" (Regular Crystal)

आरती जय जगदीश हरे

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे, भक्त जनों के संकट, क्षण में दूर करें ॥ ॐ ॥
जो ध्यावे फल पावे, दुःख बिन से मन का ॥ प्रभु ॥ सुख–सम्पत्ति घर आवे, कष्ट मिटे तन का ॥ ॐ ॥
मात–पिता तुम मेरे, शरण गहूँ मैं किसकी ॥ प्रभु ॥ तुम बिन और न दूजा, आस करूँ जिसकी ॥ ॐ ॥
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी ॥ प्रभु ॥ पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी ॥ ॐ ॥
तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्ता ॥ प्रभु ॥ मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता ॥ ॐ ॥
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति ॥ प्रभु ॥ किस विधि मिलूँ दयामय, तुमको मैं कुमति ॥ ॐ ॥
दीन बन्धु दुःख हरता, तुम रक्षक मेरे ॥ प्रभु ॥ अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे ॥ ॐ ॥
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा ॥ प्रभु ॥ श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा ॥ ॐ ॥
तन, मन, धन सब कुछ है तेरा ॥ प्रभु ॥ तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा ॥ ॐ ॥

1119

AVAILABLE IN :

28" x 40" (Regular Crystal)

आरती जय जगदीश हरे

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे, भक्त जनों के संकट, क्षण में दूर करें ॥ ॐ ॥
जो ध्यावे फल पावे, दुःख बिन से मन का ॥ प्रभु ॥ सुख–सम्पत्ति घर आवे, कष्ट मिटे तन का ॥ ॐ ॥
मात–पिता तुम मेरे, शरण गहूँ मैं किसकी ॥ प्रभु ॥ तुम बिन और न दूजा, आस करूँ जिसकी ॥ ॐ ॥
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी ॥ प्रभु ॥ पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी ॥ ॐ ॥
तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्ता ॥ प्रभु ॥ मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता ॥ ॐ ॥
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति ॥ प्रभु ॥ किस विधि मिलूँ दयामय, तुमको मैं कुमति ॥ ॐ ॥
दीन बन्धु दुःख हरता, तुम रक्षक मेरे ॥ प्रभु ॥ अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे ॥ ॐ ॥
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा ॥ प्रभु ॥ श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा ॥ ॐ ॥
तन, मन, धन सब कुछ है तेरा ॥ प्रभु ॥ तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा ॥ ॐ ॥

1120

AVAILABLE IN :

28" x 40" (Regular Crystal)

ਜਪੁਜੀ ਸਾਹਿਬ

ੴ ਸਤਿਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਭਉ ਨਿਰਵੈਰੁ ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਅਜੂਨੀ ਸੈਭੰ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ॥ ਜਪੁ ॥

ਆਦਿ ਸਚੁ ਜੁਗਾਦਿ ਸਚੁ ॥ ਹੈ ਭੀ ਸਚੁ ਨਾਨਕ ਹੋਸੀ ਭੀ ਸਚੁ ॥੧॥ ਸੋਚੈ ਸੋਚਿ ਨ ਹੋਵਈ ਜੇ ਸੋਚੀ ਲਖ ਵਾਰ ॥ ਚੁਪੈ ਚੁਪ ਨ ਹੋਵਈ ਜੇ ਲਾਇ ਰਹਾ ਲਿਵ ਤਾਰ ॥ ਭੁਖਿਆ ਭੁਖ ਨ ਉਤਰੀ ਜੇ ਬੰਨਾ ਪੁਰੀਆ ਭਾਰ ॥ ਸਹਸ ਸਿਆਣਪਾ ਲਖ ਹੋਹਿ ਤ ਇਕ ਨ ਚਲੈ ਨਾਲਿ ॥ ਕਿਵ ਸਚਿਆਰਾ ਹੋਈਐ ਕਿਵ ਕੂੜੈ ਤੁਟੈ ਪਾਲਿ ॥ ਹੁਕਮਿ ਰਜਾਈ ਚਲਣਾ ਨਾਨਕ ਲਿਖਿਆ ਨਾਲਿ ॥੧॥ ਹੁਕਮੀ ਹੋਵਨਿ ਆਕਾਰ ਹੁਕਮੁ ਨ ਕਹਿਆ ਜਾਈ ॥ ਹੁਕਮੀ ਹੋਵਨਿ ਜੀਅ ਹੁਕਮਿ ਮਿਲੈ ਵਡਿਆਈ ॥ ਹੁਕਮੀ ਉਤਮੁ ਨੀਚੁ ਹੁਕਮਿ ਲਿਖਿ ਦੁਖ ਸੁਖ ਪਾਈਅਹਿ ॥ ਇਕਨਾ ਹੁਕਮੀ ਬਖਸੀਸ ਇਕਿ ਹੁਕਮੀ ਸਦਾ ਭਵਾਈਅਹਿ ॥ ਹੁਕਮੈ ਅੰਦਰਿ ਸਭੁ ਕੋ ਬਾਹਰਿ ਹੁਕਮ ਨ ਕੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਹੁਕਮੈ ਜੇ ਬੁਝੈ ਤ ਹਉਮੈ ਕਹੈ ਨ ਕੋਇ ॥ ੨ ॥ ਗਾਵੈ ਕੋ ਤਾਣੁ ਹੋਵੈ ਕਿਸੈ ਤਾਣੁ ॥ ਗਾਵੈ ਕੋ ਦਾਤਿ ਜਾਣੈ ਨੀਸਾਣੁ ॥ ਗਾਵੈ ਕੋ ਗੁਣ ਵਡਿਆਈਆ ਚਾਰ ॥ ਗਾਵੈ ਕੋ ਵਿਦਿਆ ਵਿਖਮੁ ਵੀਚਾਰੁ ॥ ਗਾਵੈ ਕੋ ਸਾਜਿ ਕਰੇ ਤਨੁ ਖੇਹ ॥ ਗਾਵੈ ਕੋ ਜੀਅ ਲੈ ਫਿਰਿ ਦੇਹ ॥ ਗਾਵੈ ਕੋ ਜਾਪੈ ਦਿਸੈ ਦੂਰਿ ॥ ਗਾਵੈ ਕੋ ਵੇਖੈ ਹਾਦਰਾ ਹਦੂਰਿ ॥ ਕਥਨਾ ਕਥੀ ਨ ਆਵੈ ਤੋਟਿ ॥ ਕਥਿ ਕਥਿ ਕਥੀ ਕੋਟੀ ਕੋਟਿ ਕੋਟਿ ॥ ਦੇਦਾ ਦੇ ਲੈਦੇ ਥਕਿ ਪਾਹਿ ॥ ਜੁਗਾ ਜੁਗੰਤਰਿ ਖਾਹੀ ਖਾਹਿ ॥ ਹੁਕਮੀ ਹੁਕਮੁ ਚਲਾਏ ਰਾਹੁ ॥ ਨਾਨਕ ਵਿਗਸੈ ਵੇਪਰਵਾਹੁ ॥ ੩ ॥ ਸਾਚਾ ਸਾਹਿਬੁ ਸਾਚੁ ਨਾਇ ਭਾਖਿਆ ਭਾਉ ਅਪਾਰੁ ॥ ਆਖਹਿ ਮੰਗਹਿ ਦੇਹਿ ਦੇਹਿ ਦਾਤਿ ਕਰੇ ਦਾਤਾਰੁ ॥ ਫੇਰਿ ਕਿ ਅਗੈ ਰਖੀਐ ਜਿਤੁ ਦਿਸੈ ਦਰਬਾਰੁ ॥ ਮੁਹੌ ਕਿ ਬੋਲਣੁ ਬੋਲੀਐ ਜਿਤੁ ਸੁਣਿ ਧਰੇ ਪਿਆਰੁ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਵੇਲਾ ਸਚੁ ਨਾਉ ਵਡਿਆਈ ਵੀਚਾਰੁ ॥ ਕਰਮੀ ਆਵੈ ਕਪੜਾ ਨਦਰੀ ਮੋਖੁ ਦੁਆਰੁ ॥ ਨਾਨਕ ਏਵੈ ਜਾਣੀਐ ਸਭੁ ਆਪੇ ਸਚਿਆਰੁ ॥ ੪ ॥ ਥਾਪਿਆ ਨ ਜਾਇ ਕੀਤਾ ਨ ਹੋਇ ॥ ਆਪੇ ਆਪਿ ਨਿਰੰਜਨੁ ਸੋਇ ॥ ਜਿਨਿ ਸੇਵਿਆ ਤਿਨਿ ਪਾਇਆ ਮਾਨੁ ॥ ਨਾਨਕ ਗਾਵੀਐ ਗੁਣੀ ਨਿਧਾਨੁ ॥ ਗਾਵੀਐ ਸੁਣੀਐ ਮਨਿ ਰਖੀਐ ਭਾਉ ॥ ਦੁਖੁ ਪਰਹਰਿ ਸੁਖੁ ਘਰਿ ਲੈ ਜਾਇ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਦੰ ਗੁਰਮੁਖਿ ਵੇਦੰ ਗੁਰਮੁਖਿ ਰਹਿਆ ਸਮਾਈ ॥ ਗੁਰੁ ਈਸਰੁ ਗੁਰੁ ਗੋਰਖੁ ਬਰਮਾ ਗੁਰੁ ਪਾਰਬਤੀ ਮਾਈ ॥ ਜੇ ਹਉ ਜਾਣਾ ਆਖਾ ਨਾਹੀ ਕਹਣਾ ਕਥਨੁ ਨ ਜਾਈ ॥ ਗੁਰਾ ਇਕ ਦੇਹਿ ਬੁਝਾਈ ॥ ਸਭਨਾ ਜੀਆ ਕਾ ਇਕੁ ਦਾਤਾ ਸੋ ਮੈ ਵਿਸਰਿ ਨ ਜਾਈ ॥ ੫ ॥

1123

AVAILABLE IN :

28" x 40" (Regular Crystal)

1124

<u>AVAILABLE IN</u> :

28" x 40" (Regular Crystal)